मुसलेहे आज़म हज़रत अली (अ0)

हकीमुल उम्मत अल्लामा हिन्दी आयतुल्लाह सैय्यद अहमद ताबा सराह

अरब के जाहिलियत के ज़माने के बिगड़े हुए अख़लाक़ जिनको रसूल (स0) ज़ाहिरी तौर पर सुधार गये थे उनकी वफ़ात पर वही बद्वियत व जिहालत मुसलमानों में लौटने लगी बदवी और सहराई क़ानून फिर से ढके पर्दों में चलने शुरु हुए, क़बाएली और नसली इम्तियाज़ात सामने आना शुरु हो गये, माले ग़नीमत की तक़सीम में इम्तियाज़ात और ओहदे व मन्सब में इम्तियाज़ात, बैतुलमाल से ख़लीफा और ख़लीफा ज़ादियों की तनख़्वाहें मुक़र्रर होना शुरु हो गईं रिश्तेदारों के लिए मुसलमानों के माल वक़्फ़ हो गए सरमायादारी व मुल्कगीरी का न ख़त्म होने वाला सिलसिला शुरु हो गया। अली बिन अबी तालिब (अ0) अगर ऐसे नाजुक वक़्त में तलवार उठाते तो बेशक उन जनाब का अन्देशा क़ौम के एलानिया फिर जाने का अमली जामा पहन लेता और ज़ाहिरी इस्लाम भी छोड़ बैठते ज़िद और हिट से क़ुर्आन व सीरते रसूल की बिना मतलब ज़ाहिर ब ज़ाहिर मुख़ालेफत करते और अली (अ0) को रास्ते की रुकावट समझकर और औलादे रसूल (स0) को भी असहाबे रसूल क़त्ल करके रसूल (स0) की उन हदीसों का मिस्दाक़ खुल्लमखुल्ला बन जाते जो अली (अ0) और औलादे अली के क़ातिलों और तकलीफ देने वालों के बारे में बहुत ज़्यादा मौजूद हैं। अलावा इसके नौ मुस्लिम ख़िलाफती जंग को दुनियावी जंग और नुबुव्वत व इमामत को दुनियादारी का ढकोसला समझ कर पिछले मज़हबों पर लौट जाते और मुसलेहे आज़म ने क़ुर्आन व सीरते रसूल (स0) को हाथ में लेकर बात से और काम से अपनी ज़ात को पेश करके इस्लाम को बचा लिया और क़ौम के ज़ाहिरी इस्लाम के रास्ते में आकर खुल्लमखुल्ला इस्लाम से न हटने दिया जाए और सब कुछ होते देखा और एहतेजाज के तौर पर और भलाई फैलाने में कोई झगड़ा नहीं किया यहाँ तक कि दरबारे अलवी में जब अमीरे मुआविया की सियासी चालों का ज़िक्र आया तो साफ–साफ फरमा दियाः अगर तक़वा और परहेज़गारी और ख़ुदा का ख़ौफ न होता तो मैं अरब में बेपनाह चालाक इन्सान होता।

अली (अ0) ने हाकिम व महकूम बनकर हक़ीक़ी सियासत का इन चन्द जुमलों में मतलब समझा दिया। चालाकी, मक्कारी, हीला साज़ी, अह्कामे इलाही से भागने का नाम अगर सियासत है तो वह शख़्स क़ौमों का नस्ल दर नस्ल मुजरिम है, वतन का मुजरिम है, तहज़ीब व अख़लाक़ का मुजरिम है, ख़ुदा का मुजरिम है, आज आलम के सियासतदानों के बारे में दुनिया के ख़ुले हुए फतवे मौजूद हैं। ख़ुद सियासी लोगों के हाथ पैर और इसी मशीन के कल पुरज़े, तक़रीरों, तहरीरों में इन लानती कारगुज़ारियों को ख़ुद छुपाते रहते हैं। क्या कहना उस अलवी सियासत का जिस की बुनियाद तक़वा हो।

□□□